MIZORAM UNIVERSITY JOURNAL OF HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES
A Refereed Bi-annual Journal
ISSN(P): 2395-7352
eISSN: 2581-6780
Vol. VIII, Issue 2 (December 2022) http://www.mzuhssjournal.in/

Mizo Lok Kathaon Mein Abhivyakt Stree Kee Sthiti

Lalchhuanawma*
Sanjay Kumar†

Abstract

Most of the tribal societies in India are patriarchal, and women are treated as second class citizens, discriminated against and oppressed by men. The tribal society of Mizoram State in Northeast India is no exception to this. Since ancient times, the Mizo tribal ethnicity following customary laws has remained patriarchal despite being celebrated as the second most educated people in the 21st century. Surprisingly, when women are found in every workplace, made to do maximum physical labour on a daily basis, they are deprived of economic, religious and political equality, the fact of which tells the lot of their subjugation and exploitation. Their social rights are almost negligible in comparison with the men's. The serious proportion of Mizo women's unequal status has not drawn wide attention in the larger Indian society including women rights groups. In short, the status of Mizo women does not show qualitative change. Ancient Mizo folk tales are even relevant today to testify to the fact.

***Keywords**: Tribal, Patriarchal Society, Mizo Folk Tales.*

*Research Scholar, Department of Hindi, Mizoram University, Aizawl, Mizoram, India.
†Professor, Department of Hindi, Mizoram University, Aizawl, Mizoram, India. Email: sanjaykumarmzu@gmail.com

मिज़ो लोक कथाओं में अभिव्यक्त स्त्री की स्थिति

ललछुआनओमा‡
प्रो. संजय कुमार§

शोध-पत्र सार

भारत में अधिकांश आदिवासी समाज पितृसत्तात्मक हैं, जहाँ स्त्रियों को दूसरे दर्जे के नागरिकों के रूप में माना जाता है, उनके साथ भेदभाव किया जाता है और पुरुषों द्वारा उन पर अत्याचार किया जाता है। पूर्वोत्तर भारत के मिजोरम राज्य का आदिवासी समाज भी इसका अपवाद नहीं है। प्राचीन काल से, प्रथागत कानूनों का पालन करने वाली मिज़ो आदिवासी जातीयता 21वीं सदी में दूसरे सबसे शिक्षित राज्य के निवासी होने के बावजूद पितृसत्तात्मक बनी हुई है। आश्चर्य की बात यह है कि जब स्त्रियाँ यहाँ हर कार्यस्थल पर पायी जाती हैं, उनसे दैनिक आधार पर अधिकतम शारीरिक श्रम कराया जाता है, तो वे आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक समानता से कैसे वंचित हो जाती हैं, यह तथ्य उनकी पराधीनता और शोषण के बारे में बहुत कुछ कहता है। पुरुषों की तुलना में उनके सामाजिक अधिकार लगभग नगण्य हैं। मिज़ो स्त्रियों की असमान स्थिति के गंभीर अनुपात ने स्त्री अधिकार समूहों सहित बड़े भारतीय समाज में व्यापक ध्यान आकर्षित नहीं किया है। संक्षेप में, मिज़ो स्त्रियों की स्थिति में गुणात्मक परिवर्तन नहीं दिखता है। इस तथ्य की गवाही देने के लिए प्राचीन मिज़ो लोक कथाएँ आज भी प्रासंगिक हैं।

बीज शब्द: *आदिवासी, पितृसत्तात्मक समाज, मिजो लोक कथाएं* |

मिज़ो लोक कथाओं में नारी पात्र को विशेष स्थान प्राप्त है। अधिकांश नारी पात्र कथा को मनोरंजक बनाती हैं। इनका किरदार कथा को परिपक्वता प्रदान करती है। मिज़ो लोक कथा से यह ज्ञात होता है कि घर गृहस्थी में मिज़ो नारियों का कितना महत्वपूर्ण योगदान है। प्रातः काल से रात के सोने तक वे व्यस्त रहती थी, घर गृहस्थी का कार्य इनके बिना संभव नहीं है। औरतें केवल घरों में ही नहीं बल्कि झूम खेतों में भी पुरुषों के साथ कंधे से कंधे मिलाकर काम करती हैं। मिज़ो लोगों में यह प्रचालन है कि खेती के लिए जंगल को काट कर साफ करने का काम केवल पुरुषों का है और उस पर बीज बोने का काम औरतों का। जल स्रोतों से जल लाने, खाना पकाने के लिए जंगलों से लकड़ी इकट्ठा करना, धान को सुखाना तथा उसे कुट कर चावल बनाना, सूत काटना, घर में पालतू जानवरों का देखभाल करना आदि सभी काम औरतों का माना जाता है। इसके बावजूद समाज तथा परिवार में इन्हे पुरुषों की भांति महत्व नहीं दिया जाता था। मिजो लोक कथाओं

‡शोध छात्र, हिंदी विभाग, मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइज़ॉल.
§आचार्य, हिंदी विभाग, मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइज़ॉल, ईमेल: sanjaykumarmzu@gmail.com

में मिज़ो परिवार तथा समाज में मिज़ो नारियों का चित्रण किस प्रकार किया गया है उसका अवलोकन दिलचस्प होगा।

परिवार में नारी का स्थान

अधिकांश मिज़ों कथाओं से यह स्पष्ट होता है कि घर गृहस्थी के सारे काम करने पर भी नारी की स्थिति बहुत दयनीय है। बच्चों में भी लड़कों के मुक़ाबले लड़कियों से अधिक काम लिया जाता है। थाइलुंगी, माउरुआङी, केलचोङी, नुछीमी, ङइतेई आदि की कहानियों से स्पष्ट होता है कि मिजो समाज और परिवार में लड़कों से कई गुणा अधिक काम लड़कियाँ करती हैं।

"एक दिन, केलचोङी को उसकी माँ ने 'माई' अर्थात कद्दू पकाने के लिए कहा, और वह झूम खेत में काम करने चली गई। केलचोङी ने अपनी माँ की बात को ठीक से नहीं सुना। उसने 'माई' अर्थात कद्दू की जगह 'नाउ' अर्थात छोटे भाई या बहन को बर्तन में पका दिया। जब उसकी माँ खेत से काम करके वापस आई, तब उसने उसकी छोटी बहन के बारे में पूछा। केलचोङी ने जवाब दिया कि माँ तुम्हारे कहने के मुताबिक मैंने उसे पका दिया है।"[1] मिजो समाज में लड़कियां बचपन से ही खाना पकाने में अपनी माँ का हाथ बटाती हैं। यह हमें केलचोङी औए नुछीमी की कथा से पता चलता है। लड़के खाना नहीं पकाते हैं और उन्हें खाना पकाना भी नहीं आता है। इस बात की जानकारी 'छूरा' की कहानी से मिलता है। यदि पुरुष चूल्हे के पास बैठा हो और चूल्हे पर चढ़ी सब्जी को चलाना या हिलाना पड़े तब भी वह उसे न हिलाकर पत्नी को आवाज लगाता है। 'छूरा' भी अपनी पत्नी को आवाज लगाता है- "सब्जी को हिलाना है।"[2] इस बात से यह स्पष्ट हो जाता है कि मिजो परिवार में खाना पकाना स्त्री का कर्तव्य है ।

लड़की जब बालिग हो जाती है तब वह पूरे घर को संभालती है। परिवार के सदस्यों के लिए ओढ़ने का चादर तथा पहनने के लिए कपड़ों का प्रबंध वही करती है। मिज़ो लोक कथाओं से स्पष्ट होता है कि पुराने समय से सूत काटना तथा कपड़े बुनना स्त्रियों का दायित्व था। रिमेनहोई, ललरुआङ, थाइलुंगी आदि कहानियों में सूत काटना तथा कपड़े बुनने के कार्य का वर्णन किया गया है। सूत काटने में माहिर कुँवारी लड़कियों को वधू के लिए पसंद किया जाता है और माताएँ अपनी बेटियों को यह कला सिखाती हैं। "एक गाँव में तूआनपुई नाम कि एक बहुत सुंदर लड़की रहती थी। वह खाते-पीते घर से थी। एक दिन छोरतुइन्हौला उस गाँव में आया। एक बार जब उसने तूआनपुई को बुनाई करते हुए देखा तो छोरतुइन्हौला को उससे प्यार हो गया।"[3] मिज़ो गृहस्ती में जवान लड़कियों के लिए खाना बनाना, पीने का पानी ढोना, लकड़ियाँ बटोरना, सूत काटना, कपड़े बुनना, धान कुटना आदि उनका महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व माना गया है। जबकि मर्दों और लड़कों को उससे मुक्त रखा गया है। यदि कोई मर्द ये सभी कार्य करता है तो यह उस घर की औरतों तथा लड़कियों के लिए बहुत ही शर्मिंदिगी की बात मानी जाती है। इसलिए ये काम मर्द नहीं करते हैं। जल स्रोतों से पानी ढोना औरतों का दायित्व है ये बात मिजो लोक कथाओं से स्पष्ट होती है, जैसे- ङाइते, छूरा की पत्नी तथा थाइलुंगी आदि को पानी ढोते दिखाया गया है।

"थाइलुंगी ने इन सारी बातों को सुन लिया। वह बहुत ही दुखी हो गयी। अपनी माँ की बात को टाल नहीं सकी, वह दुविधा के साथ चुप रह गई। उसकी माँ ने उससे कहा – थाइलुंगी, पानी लेने पोखर जाओ, परंतु ' एम ' अर्थात बलिया, ' ऊम ' अर्थात बांस का बड़ा नली, जो पानी लेने तथा रखने के लिए प्रयोग किया जाता था और ' फेनथ्लिर ' अर्थात लौकी का बना करछू जिसे पानी भरने में प्रयोग होता है। खराब वाला ही लेकर जाओ। थाइलुंगी बड़ी दुखी मन से पोखर की ओर चल पड़ी।"[4] यदि कोई पुरुष पानी ढोता है तो यह जाहिर होता है कि उसकी पत्नी बीमार या घायल है। और जब कोई पुरुष पोखर पर पानी लेने जाता है तब उसे सबसे पहले पानी भरने दिया जाता है। इस कारण मिज़ो लोगों में एक कहावत है- "पोखर में पुरुष का राज, और लोहार के कारख़ाना में औरत का राज होता हैं।"[5]

जलाने की लकड़ी बटोरना भी स्त्रियों का कार्य माना जाता है। घर में जलाने की लकड़ी का अभाव हो जाए तो उस घर की स्त्रियों के लिए बहुत शर्मनाक बात होती है। कई मिज़ो कहानियाँ जैसे- तुवांपुई, तुवाल्वुंगी, चेमतेई, थांङी और चला आदि में भी स्त्रियों द्वारा जंगलों से लकड़ियां बटोरने का वर्णन मिलता है। "चेपाहाखातअ अब राजा बनकर शहर में टहलने गया तो प्रजा ने उसके साथ बहुत ही अच्छा व्यवहार किया। उसे इज्ज़त के साथ मदिरा पिलाया और मांस काटकर खिलाया जिसके कारण वह टहलते ही रह गया। चेपाहाखातअ इतनी देर तक टहलता रहा कि उसकी बेटी भी जंगल से लकड़ी बटोरने योग्य की अवस्था की हो गयी।"[6] इसके अलावा धान कुटना स्त्रियों का एक और महत्वपूर्ण कार्य है। 'दुहमंगा और दारदिनी' की कहानी में भी धान कूटने का वर्णन मिलता है। पुराने जमाने में मिज़ो लोग किसी युवती की गुणवत्ता की परख सुबह के समय उसके धान कूटने के लिए दहलीज को लांघने के ढंग से किया करते थे।

मिजो परिवार के सबसे महत्वपूर्ण अंग होने के बावजूद भी स्त्रियों की स्थिति परिवार में बहुत ही दयनीय होती थी। मिजो परिवार में हर विषय पर निर्णय केवल मर्द लेते हैं। वे अपने घर के मुखिया यानि घर के मर्द की सहमति के बिना अपनी मनपसंद का वर भी नहीं चुन सकती थी। एक गाँव के मुखिया की बेटी 'ललथेरी' भी अपने प्रेमी 'चलथंङा' के साथ शादी रचा नहीं पायी। उसके भाइयों ने चलथङा को ही गाँव से बेदखल कर दिया।

मिज़ो लोक कथाओं में देखने को मिलता है कि लड़की शादी के उपरांत अपने ससुराल में भी शोषित एवं प्रताड़ित होती है। ' दारदिनी ' एक विधवा की बेटी थी उसका पति 'दुहमङा' उससे बहुत प्रेम करता था किन्तु उसके पति के गैरहाजिरी में 'दारदिनी' को उसके घरवाले तलाक दे देते हैं। बाद में तो उसे शोषित करके गाँव से बहिष्कृत कर देते हैं। 'टूआन्पुई' से भी उसका पति 'छोरतुइनेईलला' की माँ यानि सास बहुत नफरत करती थी। 'दारदिनी' के गले में माला की हल्की खरोंच को देखकर उसकी सास उसे कोढ़ बताती है और उसे खूब खरी-खोटी सुनाती है। उसके द्वारा लाये गए स्वच्छ पानी को भी गंदी नाली का पानी और जंगल से लाई हुई लकड़ी को भी हमेशा खराब कहती हैं। अंत में वह उन दोनों की शादी तक तोड़ देती हैं।

इसके अतिरिक्त भी कई ऐसी लोक कथाएँ हैं जो स्त्री की दुर्दशा पर आधारित हैं। जहां स्त्रियाँ अपने ससुराल में कष्ट और उपेक्षाएँ झेलती हैं। के. सी. वनङ्हाका लिखते हैं – "मर्द अपना अधिकतर समय जंगल में शिकार तथा खेतों में काम करते हुए बिताते थे। इस दौरान उनके बीवी बच्चों को कई प्रकार की मुसीबतों का सामना करना पड़ता था।"[7]

प्रोढ़ या बुजुर्ग महिलाओं का भी परिवार में कोई खास दर्जा नहीं होता था। घर के सबसे परिश्रमी और उपयोगी सदस्य होकर भी पारिवारिक मामलों जैसे- बच्चों के शादी-ब्याह में उनकी राय का कोई महत्व नहीं होता था। मर्द ही सभी निर्णय लेते थे। किसी विषय पर यदि औरत कुछ कह भी देती तो उसके बातों को सुना नहीं जाता था। वह अपनी बेटी से कितना भी प्यार दुलार करे, बच्चों के मामले में अंतिम निर्णय का अधिकार केवल पिता का ही होता था। माँ कुछ नहीं कह पाती थी। ललतथेरी की माँ ललतथेरी के प्रेमी चलथंगा की हत्या करने के लिए ललथेरी के भाइयों के षड्यंत्र को जानते हुए भी चुप रहती है। ललथेरी के प्रेमी चलथंगा की हत्या हो जाने पर वह अपनी बेटी के दुख में शामिल होकर अपना बाकी सारा जीवन दुख में बिताती है।

समाज में नारी का स्थान

मिजो समाज में नारी की स्थिति बड़ी दयनीय होती थी। एक समान ही जुर्म करने पर मर्दों के मुक़ाबले औरतें अधिक बदनाम होती थीं। एक मशहूर कहावत है - "औरतों के साथ झगड़ा करते रहने से बेहतर है उसे तलाक दे देना। औरत और बांस की बाड़ी को कभी भी बदला जा सकता है।"[8] यह कहावत मिज़ो लोक कथाओं में भी दृष्टिगत होती हैं। दारठियाङी को कोई संतान नहीं होने पर उसका पति चेरतूआला उसका तिरस्कार कर दूसरी शादी कर लेता है। दारठियाङी कोई गलती ना होते हुए भी तलाक की सजा भुगतती है।

मिज़ो लोक कथा में स्पष्ट रूप से दिखता है कि विधवा औरत का तिरस्कार किया जाता जाता है। केवल विधवा ही नहीं बल्कि उनके बच्चों का भी तिरस्कार किया जाता है। विधवा औरत के बच्चों की शादी ब्याह में भी कठिनाई होती थी। 'दारी और फियारा' की कथा में ये दोनों आपस में बहुत प्रेम करते थे किन्तु फियारा एक विधवा का पुत्र था, इस वजह से उन दोनों की शादी नहीं हो पाती है। इसी प्रकार 'दर्दिनी' भी एक विधवा की पुत्री थी इस कारण उसे 'दुहमङा' (मुखिया का बेटा) से शादी नहीं करने दिया गया।

"सरदार का बेटा दुहमङा एक विधवा की बेटी दर्दिनी से बहुत प्यार करता था। वह रिश्ता सरदार को मंजूर नहीं था क्योंकि उसकी नज़र में यह संबंध उनके परिवार के रुतबे के अनुरूप नहीं था। बावजूद इसके दुहमङा ने अपने माता-पिता की इच्छा के विरुद्ध जाकर दर्दिनी से ब्याह रचा लिया। एक दिन जब दुहमङा लंबे अर्से के लिए शिकार पर बाहर गया, तो दुहमङा के माता-पिता ने दर्दिनी से कहा- 'दुहमङा से तुम्हारा तलाक हो गया है, इसलिए तुम अपनी माँ के घर चली जाओ।"[9]

मिज़ो लोक कथाओं से स्पष्ट होता है कि मुखिया की पत्नी का शासन-प्रशासन में कोई दायित्व नहीं होता था। मुखिया का निर्णय अंतिम होता था, निर्णय लेते वक़्त पत्नी की राय या मत नहीं लिया जाता था। वह केवल मुखियाईन नाम मात्र की होती थी। उनका कोई विशेष अधिकार नहीं हुआ करता था। औरतों की समझदारी के संबंध में मिजो समाज में एक कहावत प्रचलित है- 'औरतों की बुद्धि गाँव के पोखर तक ही सीमित है।'[10] 'ललथेरी और चलथङा' लोक कथा से यह बात स्पष्ट होता है। जब चलथंङा को गाँव से बाहर निकाला जाता है तब उसकी प्रेमिका ललथेरी की माँ, गाँव की मुखियाइन होकर भी कुछ बोल और कर नहीं पाती है। 'दो अनाथ भाई' की कहानी में भी लियानदौवा जो एक विधवा का बेटा था, उसकी प्रेमिका 'तूआईचोंगी' ने जब लियानदौवा को अपने पाती के लिए चुना, तब 'तूआईचोंगी' के पिता, जो उस गाँव के मुखिया थे, आग बबूला हो जाते हैं और गुस्से में आकार अपनी बेटी की उंगली काट लेते हैं। इस पर भी मुखियाइन कुछ कहने की हिम्मत नहीं जुटा पाती हैं।

मिज़ो लोक कथाओं में वृद्ध महिलायें बेशक बड़ी ही मददगार होती हैं। जरूरत मंदों के प्रति बुढ़ियों (वृद्ध महिलायें) की दया और प्रेम के कई किस्से मिज़ो लोक कथाओं में देखने को मिलता है। अनाथ ल्यानदौवा और उसके भाई के प्रति एक बुढ़िया पी फीङी की सहानुभूति और मदद की कथा भी मौजूद है। जब राजा लेरसिया ने लियांदौवा को मिथुन भेंट किया था तब अच्छी नस्ल के मिथुन चुनने में एक बुढ़िया ने इनकी मदद की थी जो हर माह एक बछड़े को जन्म देती थी। जिसके कारण लियांदौवा की आर्थिक स्थिति में सुधार आया और वह गाँव में सामूहिक भोज देने में सफल हुआ। ऐसी चतुर बुढ़िया पात्रों वाली अनेक मिज़ो लोक कथा समाज में प्रचलित हैं।

"लियांदौवा और उसका भाई तूआईसियाला का अपने गाँव लौटने का समय भी निकट आता गया। लेरसिया के मकान के पिछवाड़े वाले घर पर एक बूढ़ी औरत रहती थी। लियांदौवा उस बुढ़िया के घर गया और उससे कहा - 'दादी जी, यह लेरसिया मुझे एक मिथुन का बछिया पालने के लिए दे रहा है, आप मुझे यह बता दीजिए कि कौन सा बछिया इनमें से सबसे अधिक स्वस्थ और अच्छी नस्ल का है?' यह सुनकर बुढ़िया ने जवाब दिया – 'बेटे, तुमने मुझसे यह बात पूछ कर बहुत ही बुद्धिमानी का काम किया है क्योंकि मेरे अलावा किसी को यह पता नहीं है कि लेरसिया के मिथुनों में कौन कैसा है? तुम सही जगह पर आए हो। देखो, जब तुम मिथुन के तबेले में जाओगे वहाँ तुम्हें बड़े से बड़े नर और मादा मिथुन भरे पड़े मिलेंगे। लेकिन उनमें से एक को भी मत चुनना। उन सबके पीछे तुम्हें एक छोटी सी मिथुन की बछिया ,जो एक बकरे के कद की होगी, भुसों के बीच फुदकती हुई मिलेगी। केवल उसी को ही चुन लेना। वही श्रेष्ठ नस्ल की मिथुन है जो हर महिने बछड़े को जन्म देती है।' धन्यवाद दादी जी कहकर – लियांदौवा उस बुढ़िया की बात को गांठ बांध लेता है।"[11]

इस प्रकार हम समझ सकते है कि मिज़ो लोक कथाओं में जरूरतमंदों की मदद करनेवाली महिला खासकर एक बुढिया ही होती थी। कई स्त्रियाँ क्रूर एवं स्वार्थी भी होती थीं किन्तु जरूरतमंदों की मदद करने

वाली स्त्री भी होती थी। मिजो लोक कथा के आधार पर हम कह सकते हैं कि कुछ मिजो स्त्रियाँ बड़ी मददगार एवं सहानुभूतिपूर्ण होती थीं।

निष्कर्षतः हम कह सकते है कि मिज़ो लोक कथाओं में अभिव्यक्त अधिकांश स्त्रियों की परिवार तथा समाज में स्थिति बहुत ही दयनीय थी। इन पर होने वाले सभी प्रकार के शोषण समाज और परिवार में उनकी निम्न स्थिति को दर्शाते हैं। जो मिजो जनजातीय समाज के पितृसत्तात्मक और उसमें पुरुष वर्चस्व का द्योतक है।

****

सदर्भ ग्रंथ

1. Laltluangliana, Folktales of Mizoram, Art & Culture Dept. Mizoram, 1997, Pg-157
2. James Dokkhuma, Hmanlai mizo Kalphung, R. Lalrawna, Gilzom Press, Aizawl,1992, Pg-268.
3. सरिता बरारा, मिज़ोरम की लोककथाएं, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, नई दिल्ली, 2015, पृ. 51)
4. आर. ललथ्लामुआनी, मिज़ोउ लोक साहित्य, केंद्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, 2009, पृ.-111
5. L. T. Khiangte, Folk Literature, Sahitya Akedemi, 2001, Pg-154
6. आर. ललथ्लामुआनी, मिज़ोउ लोक साहित्य, केंद्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, 2009, पृ.-179
7. K. C. Vannghaka, Folk Literature, Aizawl, Vanhlupuii, 2015, Pg-63।
8. के. ज़ोला, मिज़ो पी-पू लेः अन थ्लाहते चनचिन, ललनिपुई, आइज़ोल, 2011,पृ.-142
9. रमणिका गुप्ता, पूर्वोत्तर-आदिवासी सृजन मिथक एवं लोककथाएँ, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नई दिल्ली, 2010, पृ.179
10. James Dokhuma, Hmanlai Mizo Kalphung, R. Lalrawna, Gilzom Press, Aizawl,1992, Pg.-267
11. P. S. Dahrawka, Mizo Thawnthu, Thankhumi, Aizawl,1987, Pg-66.